

डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, आमोस: सिंह दहाड़ चुका है, कौन नहीं डरेगा?

सत्र 7 (बी): आमोस 7:1-8:3, न्याय का समय आ गया है अनिवार्य

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म की आमोस की पुस्तक पर शिक्षा है। आमोस, सिंह दहाड़ चुका है, कौन नहीं डरेगा? यह सत्र 7 (बी), आमोस 8:4-9:10 है। न्याय अपरिहार्य है।

खैर, आइए आमोस का अध्ययन जारी रखें। हमने अध्याय 8, पद 1 पर छोड़ा था, और जैसा कि मैंने पहले बताया, अध्याय 8, पद 1-3, जिसे मैंने प्रतीकात्मक स्थिर जीवन शीर्षक दिया है, वास्तव में आगे की कहानी से मेल खाता है क्योंकि यह एक दर्शन है जो भविष्यवक्ता को मिला था। तो आपको याद होगा कि अध्याय 7 में हमें तीन दर्शन हुए थे।

पहले दो दृश्य चलचित्र जैसे थे। प्रभु ने आमोस को राष्ट्र पर आने वाले अपने न्याय का दृश्य दिखाया, टिड्डियाँ तेज़ी से आ रही थीं और फसलों को नष्ट कर रही थीं, और फिर आग ने पूरे देश को अपनी चपेट में ले लिया और सब कुछ नष्ट कर दिया। और आमोस चिल्लाया, "क्षमा करें, और फिर रुकें।"

और प्रभु ने दया दिखाई। लेकिन उस तीसरे दर्शन में, प्रभु एक तस्वीर मात्र थे, और दीवार के पास एक साहुल पकड़े हुए प्रभु की एक तस्वीर मात्र थे। और मुझे लगता है कि आपको, इस पुस्तक में इससे पहले जो कुछ भी हुआ है, उसके आधार पर यह मान लेना चाहिए कि वह दीवार साहुल लगाने के लिए नहीं बनी है।

यह टेढ़ा हो गया है। इसलिए प्रभु आमोस को मजबूर कर रहे हैं कि वह चीज़ों को अपने नज़रिए से देखे, न कि मानवीय नज़रिए से कि इसका न्याय के पात्रों पर क्या असर होगा। लेकिन प्रभु ऐसा क्यों कर रहे हैं? इसलिए वह अपने नज़रिए को सही करने की कोशिश कर रहे हैं।

और फिर अध्याय 8, श्लोक 1 से 3 में हमें एक और दर्शन मिलता है, लेकिन बीच में हमें आमोस की पुजारी से हुई मुलाकात का विवरण मिलता है। और बेशक, आमोस उस पुजारी के खिलाफ एक बहुत ही कड़ा संदेश देता है जिसके बारे में हमने बात की थी। और मुझे लगता है कि इस बिंदु पर, आमोस ने अपने निजी अनुभव से, एक ऐसे व्यक्ति के साथ व्यवहार करके जो शीर्ष पर है, सीख ली है।

वह उस कुलीन वर्ग का हिस्सा है। वह बेथेल का पुजारी है, जिसे वह राजा का पवित्रस्थान कहता है। और मुझे लगता है कि उसे एहसास है कि ये लोग हद से ज़्यादा आगे बढ़ गए हैं, और उन्होंने अपनी सीमाएँ लाँघ दी हैं, और राजा के बारे में उनकी सोच ईश्वर से ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

और मुझे लगता है कि अमोस उस बिंदु पर पहुँच गया था जहाँ उसे एहसास हुआ कि हाँ, न्याय ज़रूरी है। और यह अंतिम दर्शन जो हम अध्याय 8, पद 1 से 3 में देखते हैं, वास्तव में इस बात को पुष्ट करता है। प्रभु ने निश्चय किया है कि हाँ, न्याय अवश्य होगा, और यह दर्शन इसी बात को दर्शाता है।

तो चलिए इसे पढ़ते हैं। यह वही है जो प्रभु यहोवा ने मुझे दिखाया था। पके फलों से भरी एक टोकरी।

यह गर्मियों के फलों की एक टोकरी है। शायद इसमें अंजीर और अनार भी शामिल हैं, और यह बस एक स्थिर जीवन है। पुराने ज़माने में कलाकार, खासकर, बस स्थिर जीवन ही चित्रित करते थे।

वे मेज़ पर रखी साधारण चीज़ों की पेंटिंग बनाते थे और उन्हें स्थिर जीवन कहते थे। तो यह बस इस गर्मी के फल की एक तस्वीर है, और इस पके फल के लिए हिब्रू शब्द है कयेत्ज़। कयेत्ज़।

याद है। अमोस, तुम क्या देख रहे हो? उसने पूछा। पके फलों की एक टोकरी, अमोस ने कहा।

एक कलुव कयेत्ज़। तो उसने ठीक-ठीक बताया कि वहाँ क्या था। मैंने पके फलों की एक टोकरी लेकर जवाब दिया।

ग्रीष्म ऋतु के फलों से भरी एक टोकरी। तब यहोवा ने मुझसे कहा, "मेरी प्रजा इस्राएल के लिए समय आ गया है। मैं अब उन्हें और न छोड़ूँगा।"

उस दिन, प्रभु यहोवा की वाणी है, मंदिर में गाए जाने वाले गीत विलाप में बदल जाएँगे। हर तरफ़ ढेरों लाशें बिखरी होंगी। सन्नाटा छा जाएगा।

तो, न्याय के कुछ चित्र पुस्तक में पहले आए थे, लेकिन एनआईवी का अनुवाद है, "मेरे लोगों इस्राएल के लिए समय आ गया है।" यह न्याय की इस घोषणा और क्रायत्ज़ के दर्शन के बीच संबंध दर्शाने का प्रयास कर रहा है। लेकिन अगर आप इसका इब्रानी में शाब्दिक अनुवाद करें, तो यह होगा, "प्रभु ने मुझसे कहा, मेरे लोगों इस्राएल का अंत आ गया है।"

मैं अब उन्हें न तो छोड़ूँगा और न ही उनसे गुज़रूँगा। और इब्रानी में अंत के लिए शब्द, तो वह एक कयात्ज़ देखता है, वह ग्रीष्म ऋतु का फल देखता है, और फिर प्रभु कहते हैं, "अंत आ गया है।" क्या संबंध है? मुझे लगता है कि एनआईवी ने "परिपक्व" शब्द का प्रयोग करके यह दर्शाने का अच्छा काम किया है कि दोनों में एक संबंध है।

लेकिन अंदाज़ा लगाइए क्या? हिब्रू शब्द अंत के लिए है, क्रायत्ज़, क्रायत्ज़। समानता सुन रहे हैं? क्रायत्ज़, क्रायत्ज़। और इसलिए यह उन ध्वनि-नाटकों में से एक है जिसका इस्तेमाल भविष्यवक्ता करते थे, जिन्हें आप अंग्रेज़ी में आसानी से नहीं सुन सकते।

लेकिन हिब्रू में ग्रीष्मकालीन फल शब्द का अर्थ अंत जैसा लगता है। इसलिए जब वह कयेत्ज़ देखता है, तो उसे कयेत्ज़ के बारे में सोचना चाहिए, जो एक ऐसा ही शब्द है। और हाँ, ग्रीष्मकालीन फल एक तरह से, ग्रीष्मकालीन फलों की कटाई भी कृषि मौसम के अंत में होती है।

और इसलिए यह अंत के विचार से मेल खाता है। लेकिन प्रभु यह कहना चाह रहे हैं कि यह ग्रीष्मकालीन फल आपको अंत शब्द के बारे में सोचने पर मजबूर कर दे, और मेरे लोगों के लिए अंत आ गया है। गेजेर कैलेंडर, हमारे पास एक दस्तावेज़ है जो हमें मिला है, एक शिलालेख जिसे हमने गेजेर कैलेंडर कहा है, और यह कृषि ऋतु को इस्राएलियों के दृष्टिकोण से दर्शाता है।

और गर्मियों के फलों की कटाई अगस्त और सितंबर में कृषि ऋतु के अंत में होती थी। और इसे गेजेर कैलेंडर में सबसे आखिर में सूचीबद्ध किया गया है। तो, क्रायत्ज़, देखिए, उनके मन में यह हमेशा कृषि ऋतु के अंत से जुड़ा होता है।

तो यहाँ उन्होंने शब्दों का एक सुंदर खेल रचा है। प्रभु अपनी इब्रानी भाषा जानते हैं, और अपनी बात कहने के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं। तो हमने वह भाग पूरा कर लिया, तो अध्याय 7 पद 1 से अध्याय 8 पद 3 तक, दर्शनों की इस श्रृंखला का सिद्धांत क्या है? हमने इसे पहले भी बताया है, लेकिन फिर से दोहराना चाहूँगा कि परमेश्वर के कठोर न्याय को समझने के लिए, हमें वास्तविकता को उसके दृष्टिकोण से देखना होगा।

तो मैं इसे फिर से दोहराता हूँ, परमेश्वर के कठोर प्रतीत होने वाले न्याय को समझने के लिए, हमें वास्तविकता को उसके दृष्टिकोण से देखना होगा। और मुझे लगता है कि बहुत से लोग प्रकाशितवाक्य जैसी पुस्तक पढ़ते समय परमेश्वर के न्याय पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और परमेश्वर के चरित्र के बारे में कुछ बातों से उसका अनुमान लगाते हैं, और उसकी भलाई पर प्रश्न उठाते हैं। लेकिन परमेश्वर सर्वोच्च है, वह न्यायी है, और वह अच्छा भी है, और हमें इन सब बातों को संतुलित रखना होगा।

और कभी-कभी ऐसा करना मुश्किल होता है, लेकिन मुझे लगता है कि जब आप नरक के बारे में, नरक की पूरी अवधारणा के बारे में, और उसके परिणामों के बारे में सोच रहे हों, तो यह ज़रूरी है। कुछ लोग कहेंगे, "यह तो अनंत सज़ा है।" कुछ लोग इतना आगे नहीं जाएँगे।

वे विनाश की बात करेंगे, शायद परमेश्वर द्वारा उचित दंड दिए जाने के बाद, लेकिन आप जहाँ भी पहुँचें, यह कठोर न्याय है, लेकिन आपको इसे परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखना होगा। और वह सर्वज्ञ है, वह न्यायी है, इसलिए उसका दृष्टिकोण ही मायने रखता है, और यही वह दृष्टिकोण है जिसे उसने आमोस को साहुल रेखा के आर-पार देखने के लिए मजबूर किया था। परमेश्वर ने साहुल रेखा हम सबके पास रखी है, और हम सब टेढ़ी-मेढ़ी दीवारें हैं, और परिणामस्वरूप, उसका न्याय और पवित्रता इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती, इसलिए न्याय आवश्यक है।

इसलिए भावनात्मक स्तर पर इस फैसले को समझना अभी भी मुश्किल है, लेकिन इसे समझना ज़रूरी है। मैं डलास सेमिनरी में एक कोर्स पढ़ाता हूँ। मैं कई सालों से इसे पढ़ा रहा हूँ, जिसका

नाम है "पुराने नियम के ज़रिए परमेश्वर को जानना", और उस कोर्स में मुख्य काम यह दिखाना है कि परमेश्वर सर्वोच्च और महान तो है ही, साथ ही वह अच्छा भी है।

वाकई आसान है। पुराने नियम के कुछ विद्वान कहेंगे कि परमेश्वर सर्वोच्च है, वह महान है, लेकिन वह हमेशा अच्छा नहीं होता। वे यहोवा में एक शैतानी पहलू देखते हैं।

वह हर चीज़ का रचयिता है, अच्छाई और बुराई दोनों का। उसका एक अँधेरा पक्ष भी है। दूसरे कहेंगे, अच्छा, ईश्वर अच्छा है, लेकिन वह सर्वोच्च नहीं है।

वह संप्रभु नहीं है। वह बुराई से युद्ध में लगा हुआ है, और हम नहीं जानते कि कौन जीतेगा, लेकिन ईश्वर अच्छाई के पक्ष में है, और यह अच्छाई बनाम बुराई है, मानो बुराई ईश्वर के साथ सह-शाश्वत हो। यह भी सही उत्तर नहीं है।

आपको उन्हें संतुलित रखना होता है, और यह करना मुश्किल है, और मैं अपने छात्रों को उस कोर्स में यही करवाता हूँ, मुझे कई साल पहले एक युवक का पत्र मिला था जो ईश्वर की भलाई के लिए संघर्ष कर रहा था, और उसे ऐसा कोई दर्दनाक अनुभव नहीं हुआ था जो उसे भावनात्मक स्तर पर ईश्वर के विरुद्ध कर दे। वह बस धर्मग्रंथ पढ़ रहा था, और उसे ईश्वर के बारे में जो कुछ भी पढ़ा वह पसंद नहीं आया। ईश्वर उसे बहुत कठोर लग रहे थे, इसलिए वह अपना विश्वास त्यागने को तैयार था।

उन्होंने दर्जनों सेमिनरी प्रोफेसरों या कॉलेज प्रोफेसरों, बाइबिल के विद्वानों को एक पत्र भेजा, और मैं अकेला था जिसने उसका जवाब दिया, और मैंने ईमेल के ज़रिए उनसे लंबी बातचीत की। मैं उनसे कभी व्यक्तिगत रूप से नहीं मिला, और आखिरकार वे अपने रास्ते चले गए, और मैं अपने रास्ते। मैं आपको इसके बारे में विस्तार से नहीं बताऊँगा, लेकिन मैंने उनके नाम से भेजे गए पत्र का इस्तेमाल किया।

इसका कोई ज़िक्र ही नहीं है। मुझे बस उस पत्र से निपटना था। बात पत्र की विषयवस्तु की है, व्यक्ति की नहीं, और मैं अपनी कक्षा से एक प्रतिक्रिया पत्र लिखवाता हूँ क्योंकि वह बहुत बुद्धिमान व्यक्ति था।

एक अच्छे इंजील चर्च में पले-बढ़े होने के नाते, वह इन मुद्दों पर सचमुच ईमानदारी से जूझ रहे थे, और इसलिए मैं अपने छात्रों को उस पत्र को अंतिम प्रोजेक्ट के रूप में समझाता हूँ, और इसलिए यह एक कठिन मुद्दा है, और मैंने इसे पढ़ा, और मैं पाठ से समझा रहा था, और मैं यह कथन दे सकता हूँ। हमें चीजों को ईश्वर के दृष्टिकोण से देखना चाहिए, लेकिन कभी-कभी ईश्वर के दृष्टिकोण को समझना मुश्किल होता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि वह पवित्र और न्यायी हैं, और मुझे लगता है कि छोटे भविष्यवक्ता, कुछ हद तक, हमें इस मुद्दे और होशे की पुस्तक से जूझने के लिए मजबूर करते हैं। हम यहाँ होशे की बात नहीं कर रहे हैं, लेकिन अगर मैं थोड़ा भटक सकता हूँ, तो मैं आमोस पर वापस आऊँगा, लेकिन होशे की पुस्तक में दोनों तरफ कुछ कठिन अंश हैं।

मैं अपने कुछ यहूदी दोस्तों के साथ यहूदी-ईसाई बाइबल अध्ययन में शामिल हूँ, मसीहाई यहूदी नहीं। समूह में कुछ मसीहाई यहूदी भी हैं, लेकिन वे रूढ़िवादी यहूदी आंदोलन का हिस्सा हैं, और हम अभी होशे का अध्ययन कर रहे हैं, और हम इस तरह की बातों पर चर्चा कर रहे हैं, और जिस पाठ्यक्रम में मैं पढ़ाता हूँ, उसमें मैं उन्हें उनके अंतिम प्रोजेक्ट के लिए तैयार करने के लिए, होशे की पुस्तक में परमेश्वर के स्वरूप के बारे में बात करवाता हूँ। यह पवित्रशास्त्र में जो हम देखते हैं, उसका एक सूक्ष्म रूप है, इसलिए होशे में, हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों पर उन्हीं पापों के लिए कठोर दंड ला रहा है जिनका खुलासा आमोस कर रहा है।

होशे और आमोस मूलतः समकालीन थे, और होशे में परमेश्वर कहता है कि वह लोगों को उनकी संतान से वंचित कर देगा। वह उनके बच्चों को उनसे छीन लेगा, और इसका मतलब है कि एक सैन्य आक्रमण होगा, और बच्चों का कत्लेआम होगा। परमेश्वर ऐसा क्यों करेगा? वे बाल के उपासक हैं, और उन्होंने बाल के लिए प्रभु को अस्वीकार कर दिया है, जो कनानी प्रजनन देवता है, और कनानी लोग बाल की पूजा करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि वह उन्हें बच्चे और फसलें देता है, और यही वे चाहते हैं।

वह एक प्रजनन देवता है, इसलिए जब उनके बच्चे होते हैं, तो वे बाल को संतान देने के लिए धन्यवाद देते हैं। प्रभु कहते हैं, "बस इतना ही काफी नहीं है। बच्चे मेरी ओर से एक आशीर्वाद हैं, और अगर तुम मुझे इस तरह अस्वीकार कर दोगे और किसी दूसरे देवता की ओर मुड़ोगे, तो मैं ये आशीर्वाद छीन लूँगा, और अक्सर ऐसा ही होता है जब परमेश्वर पिता के पापों की सज़ा बच्चों को देता है।"

वह आशीषों को छीन लेता है क्योंकि लोग उसे आशीषों के स्रोत के रूप में नहीं पहचानते, इसलिए होशे में कुछ कठोर चित्रण मिलते हैं। प्रभु विभिन्न शिकारियों के रूप में आएंगे, और अपने लोगों पर आक्रमण करेंगे और उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। यह भयानक है, आप जानते हैं, शेर, भालू।

साथ ही, होशे के अध्याय 2 में, प्रभु कहते हैं, "मैं अपने लोगों को, मूलतः, बंधुआ बनाकर ले जा रहा हूँ। मैं उन्हें उनके प्रेमियों से अलग कर दूँगा, और आपको याद होगा कि होशे का गोमेर से विवाह इस सबका एक उदाहरण है, जहाँ वह उसके प्रति बेवफ़ा है, और फिर वह जाकर उसे प्रेम से, अद्भुत प्रेम से, वापस ले आता है, लेकिन प्रभु उन्हें बंधुआ बनाकर ले जाएँगे जहाँ वे अब बाल के आस-पास नहीं रहेंगे, और वह उन्हें वापस जंगल में ले जाएँगे।" होशे इसी छवि का प्रयोग करता है, और संक्षेप में कहें तो, वह उसके कान में मीठी-मीठी बातें फुसफुसाएगा।

वह उससे प्रेमपूर्वक संपर्क करेगा क्योंकि वह उसका पहला प्यार है, और वह उसे वापस पाना चाहता है, इसलिए पहला कदम उसे उसके प्रेमियों, झूठे प्रेमियों से दूर करना और उसका स्नेह वापस पाना है। मेरा मतलब है, यह बहुत ही कोमल भाषा है, और फिर होशे के अध्याय 11 में, प्रभु कहते हैं, "मैं अपने पुत्र को मिस्र से बाहर लाया," और मैं जानता हूँ कि मती ने इसे यीशु पर लागू किया है, जो नए आदर्श इस्राएल हैं, लेकिन होशे 11 में वह प्रभु द्वारा इस्राएल, इस्राएल राष्ट्र को मूसा के माध्यम से मिस्र से बाहर लाने की बात कर रहे हैं। मैं इस्राएल को मिस्र से बाहर लाया, और जितना अधिक मैंने उन्हें बुलाया, उतना ही वे मूर्तियों की ओर मुड़े।

खैर, वह यीशु नहीं हो सकता। वह यीशु नहीं है, इसलिए यह अंश दो स्तरों पर काम कर रहा है। आदर्श इस्राएल के रूप में यीशु के लिए एक अनुप्रयोग है, एक उपयुक्त अनुप्रयोग, जिसका अनुभव पहले के इस्राएल के अनुभव को प्रतिबिम्बित करता है।

पहले इस्राएल जंगल में असफल रहा। यीशु ने जंगल में शैतान को परास्त करके सफलता प्राप्त की, जब शैतान ने उसे लुभाया था, इसलिए दोनों ग्रंथों में कुछ समानता है, लेकिन होशे के संदर्भ में, वह इस बारे में बात कर रहा है कि कैसे इस्राएल परमेश्वर से विमुख हो गया, जबकि परमेश्वर ने उन्हें छुड़ाया था और उन्हें अपनी वाचा के लोग बनाया था, और वे झूठे देवताओं की ओर मुड़ गए, और उन्होंने प्रभु को अस्वीकार कर दिया, और इसलिए प्रभु उन पर न्याय करने जा रहे हैं, और यह कठोर न्याय होगा, लेकिन फिर आप होशे 11 में एक बिंदु पर पहुँच जाते हैं। यह आश्चर्यजनक है।

ऐसा लगता है जैसे प्रभु पर्दा हटाकर आपको अपने हृदय में झाँकने देते हैं, और वे कहते हैं, "मैं तुम्हें कैसे छोड़ दूँ?" और वे यहाँ पति-पत्नी की बजाय पिता-पुत्र की छवि का इस्तेमाल करते हैं। मैं तुम्हें कैसे छोड़ दूँ? मैं तुम्हें सदोम और अमोरा जैसा नहीं बना सकता। वे आस-पास के शहरों के दो अलग-अलग नाम इस्तेमाल करते हैं, लेकिन सदोम और अमोरा ही दिखाई देते हैं।

पूरी तरह से नष्ट नहीं कर सकता, क्योंकि मेरी दया मेरे भीतर घूमती है, और तुम पर मेरे क्रोध पर विजय पाती है, और फिर प्रभु कहते हैं, मैं ईश्वर हूँ, मनुष्य नहीं, और मुझे नहीं लगता कि तुलना, विरोधाभास यह है कि मेरे पास भावनाएँ नहीं हैं, और तुम्हारे पास हैं। नहीं, वह अपनी भावनाओं की बात कर रहे हैं, लेकिन ईश्वर होने के नाते, मैं अपनी भावनाओं को पूर्ण संतुलन में रख सकता हूँ। मेरी पवित्रता और न्याय की इच्छा से जो क्रोध उत्पन्न होता है, मैं उसे अपनी दया, करुणा और तुम्हें क्षमा करने की इच्छा के साथ संतुलित कर सकता हूँ, और इस प्रकार हम दोनों को काम करते हुए देखते हैं, और इसे ऐसे दर्शाया गया है जैसे यह ईश्वर के भीतर एक संघर्ष हो।

वह एक भावुक प्राणी है, और हममें भी भावनाएँ होती हैं। इसका एक कारण यह है कि हम उनकी छवि में बने हैं, लेकिन होशे में, आप देखिए, आपको कठोर चित्रण और कोमल चित्रण के बीच संतुलन बनाना होता है, और ऐसा लगता है कि परमेश्वर स्वयं इससे जूझ रहे हैं, और अगर आपको लगता है कि, ओह, मैं परमेश्वर का मानवरूपण कर रहा हूँ, तो मुझे माफ़ी नहीं चाहिए। यह परमेश्वर स्वयं कह रहे हैं, और आप यह नहीं कह सकते कि, वास्तव में उनमें भावनाएँ नहीं हैं, क्योंकि उस अंश में वे कहते हैं कि उनमें भावनाएँ हैं, इसलिए यह कई मायनों में एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंश है, लेकिन जब हम आमोस जैसे अंश पर आते हैं, जहाँ यह न्यायी, यह कठोर न्याय आने वाला है, तो हम इसी से जूझते हैं, और मुझे विश्वास है कि परमेश्वर टिड्डियों का उपयोग करने वाले हैं, और वे आग का भी उपयोग करने वाले हैं, हालाँकि शुरुआत में उन्होंने नरमी दिखाई थी।

इस न्याय पर कुछ भी हो सकता है, इसलिए जब हम इसे समझने और सहसंबंधित करने का प्रयास करते हैं, तो कुछ बातों पर विचार करना आवश्यक है, और इस तरह के अंश के साथ, आपको जाना होगा। मैंने होशे और कुछ अन्य ग्रंथों को पढ़ने में थोड़ा समय लिया, क्योंकि

आपको सहसंबंध स्थापित करना होता है। आपको इसे अन्य ग्रंथों के साथ सहसंबंधित करना होगा, और मैंने अपने उस मित्र से, जिसने मुझे वह पत्र लिखा था, जो मेरा मित्र, मेरा पत्र-मित्र बन गया, एक बात कही, मैंने कहा, तुम्हें याद रखना होगा कि ईश्वर, हाँ, यह कठोर लग सकता है, लेकिन वह स्वयं को पाप के परिणामों से नहीं बचाता, क्योंकि ईश्वर-मनुष्य आया, ईश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति, यीशु, ईश्वर-मनुष्य आया और पापों की सजा भुगती और उससे गुजरा, इसलिए न्याय और पाप के बारे में कुछ ऐसा है कि यह बस एक तरीका है, इसे एक निश्चित तरीके से काम करना है, और हमें छुड़ाने के लिए, ईश्वर ने इसमें प्रवेश किया और स्वयं कष्ट सहे। यीशु ने हमारे लिए क्रूस पर कष्ट सहे, न कि केवल मानव यीशु के लिए, बल्कि ईश्वर-मनुष्य ने भी क्रूस पर कष्ट सहे, इसलिए मुझे लगता है कि यह भी याद रखना महत्वपूर्ण है।

हो सकता है हम पूरी तरह से समझ न पाएँ; इस सब में एक रहस्य छिपा है, लेकिन हम यह ज़रूर जानते हैं कि परमेश्वर हमारी इतनी परवाह करता है कि वह हमें मुक्ति दिलाने के लिए खुद कष्ट सहता है। हो सकता है किसी दिन वह हमें यह सब समझा दे, हो सकता है न समझाए, हो सकता है उस समय हमें किसी उत्तर की आवश्यकता न हो। खैर, चलिए आगे बढ़ते हैं, और इस अगले भाग में, अध्याय 8, पद 4 से अध्याय 9, पद 10 तक, हम न्याय के अपरिहार्य होने के बारे में बात कर रहे हैं। हमने इसका भाग अ कर लिया है, और अब हम भाग ब कर सकते हैं, और मेरी रूपरेखा में, उप-बिंदुओं में मेरे पास तीन भाग हैं।

एक भ्रष्ट समाज पूरी तरह से ग्रहणग्रस्त हो जाता है, 8:4 से 14 तक। मैंने इसे इसलिए चुना क्योंकि यहाँ एक श्लोक में प्रभु ग्रहण का ज़िक्र करते हैं। वे प्रकाश की बात करते हैं, दिन के बीच में सब कुछ अंधकारमय हो जाता है, यह उनके लिए ग्रहण होता, और यह उनके लिए एक बड़ा संकेत होता।

यह कोई प्राकृतिक घटना नहीं होगी। उन्हें समझ नहीं आता कि ग्रहण कैसे होता है। वे इसे ईश्वरीय कृपा मानेंगे, और यह उनके अनुभव में होगा।

फिर अध्याय 9, श्लोक 1 से 6 में, मैंने इसका शीर्षक रखा है, "लुका-छिपी में ईश्वर हमेशा जीतता है।" आप समझ जाएँगे कि मैंने इसे क्यों चुना, और फिर अध्याय 9, श्लोक 7 से 10 में, हमने एक छलनी हिलाई है। आप जानते हैं छलनी क्या होती है।

आप इसका इस्तेमाल चीज़ों को अलग करने के लिए करते हैं, और प्रभु अपने लोगों को छलनी में हिलाएँगे, और यह एक अच्छी खबर होगी क्योंकि हम आमोस में होने वाले सुखद अंत की ओर बढ़ रहे हैं। हम वह बदलाव करने जा रहे हैं, और परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को छलनी में हिलाने की यह कल्पना एक अच्छी खबर है। यह धर्मी शेष लोगों के लिए अच्छी खबर है।

तो अब हम किताब के अगले भाग में गोता लगाते हुए यहीं पहुँच रहे हैं। तो अध्याय 8, श्लोक 4। हे ज़रूरतमंदों को कुचलने वालों और देश के गरीबों का नाश करने वालों, सुनो। हमने यह भाषा पहले भी सुनी है, इसलिए हम इस अन्याय के विषय पर लौट रहे हैं, और प्रभु का इन लोगों के लिए एक संदेश है जो दूसरों के साथ अन्याय कर रहे हैं, और कह रहे हैं, "वे कहते हैं, अमावस्या कब खत्म होगी ताकि हम अनाज बेच सकें?" अमावस्या के साथ एक धार्मिक उत्सव मनाया गया,

और सब्त का दिन इसलिए खत्म कर दिया गया ताकि हम गेहूँ बेच सकें, नाप में कटौती करके, दाम बढ़ाकर, और बेईमानी से तराजू से छल करके, मानो उन्हें इस पर गर्व हो।

गरीबों को चाँदी से और ज़रूरतमंदों को एक जोड़ी चप्पलों से खरीदना, लोगों को बेचना। हमने इसके ज़िक्र देखे हैं, यहाँ तक कि झाड़ू-पोंछा और गेहूँ के बदले भूसा भी बेच दिया। ठीक है, चलिए यहीं रुकते हैं।

इसलिए प्रभु उन्हें ऐसे चित्रित करते हैं जैसे वे चारों ओर खड़े हैं, जो गरीबों पर अत्याचार कर रहे हैं। वे लोगों को खरीदना और बेचना चाहते हैं। वे फसलें, अनाज और ऐसी ही अन्य चीज़ें भी खरीद-बेच रहे हैं।

और इसलिए, वे धार्मिक अनुष्ठानों के समाप्त होने और सब्त के दिन के खत्म होने का इंतज़ार नहीं कर सकते। इस समय वे सब्त के दिन का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं। वे सब्त के दिन इस तरह की आर्थिक गतिविधि या दास व्यापार में शामिल नहीं हो रहे हैं।

लेकिन वे सब्त के दिन के खत्म होने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं। और मुझे लगता है कि किसी लेखक ने कहा है, अगर आप आमोस को पढ़ेंगे, तो आपको दस आज्ञाओं में से नौ का उल्लंघन मिलेगा। दस आज्ञाओं में से नौ का उल्लंघन होगा।

एकमात्र अपवाद सब्त का दिन है। खैर, क्या यह सचमुच एक अपवाद है? और मुझे लगता है कि इस लेखक ने यही बात कही है। ठीक है, तकनीकी रूप से, उन्होंने सब्त का उल्लंघन नहीं किया है, लेकिन आत्मा में, जब आप सब्त के दिन बैठे होते हैं, तो काश वह दिन खत्म हो जाता।

आप सब्त का दिन नहीं मना रहे हैं। आप सब्त का आनंद उस तरह नहीं ले रहे हैं जैसा परमेश्वर ने चाहा था, एक तरह से काम के हफ़्ते से राहत के तौर पर जो परमेश्वर ने अपनी दया से आपको दिया है। यहाँ तक कि जब वह दुनिया की रचना कर रहे थे, तब भी उन्होंने सातवें दिन काम करना बंद कर दिया था, जिससे सब्त का एक नमूना बना।

तो, मुझे लगता है कि वे आत्मा में सब्त के दिन का उल्लंघन कर रहे हैं। हाँ। अगर उनका बस चलता, तो वे सब्त के दिन इस गतिविधि में शामिल होते।

नाप में कटौती, दाम बढ़ाना, और बेईमानी से तराजू से धोखा। खैर, यहाँ क्या हो रहा है, ये रहा। और मैं एक लेख पढ़ने जा रहा हूँ जो मैंने लिखा है।

उनकी दो पसंदीदा तरकीबें थीं, नाप कम रखना और कीमत बढ़ाना। एफ़्रा (सूखे नाप की एक इकाई) को छोटा करना और शेकेल को बड़ा करना। शेकेल एक सिक्का होता था जिससे आप कोई चीज़ खरीदते थे।

इसलिए, अनाज नापते समय, वे मानक से कम एफ़्रा (सूखे माप की एक इकाई) का इस्तेमाल करते थे, जिससे ग्राहक को जितना उसने सोचा था उससे कम मिलता था। तो, ओह, आप अनाज का एक बोरा खरीदना चाहते हैं। मुझे अपनी अल्फ़ा टोकरी लेने दो।

अरे अरे अरे! तुम छोटी टोकरी ले लो। तुम्हारे पास यहाँ दो टोकरियाँ हैं।

तो, वे किसी भी तरह से जा सकते हैं। लेकिन आप थोड़ी मात्रा लें और अनाज को नापें। यहाँ सच्चाई का एक दाना है।

नहीं, यह एक एफ़ा अनाज से भी कम है। यह शायद एक अल्फ़ा का 0.8 है। तो, एक तरफ़ यही हो रहा है।

तो, ग्राहक को जितना उसने सोचा था उससे कम मिलेगा। साथ ही, वे खरीद मूल्य मापने के लिए मानक से ज़्यादा भारी शेकेल वज़न का इस्तेमाल करते हैं ताकि ग्राहक वास्तव में जितना देना चाहिए उससे ज़्यादा दे। तो, आपको मुझे एक शेकेल देना होगा।

खैर, उसके पास एक शेकेल नाप है, लेकिन वह सामान्य शेकेल से भारी है। तो, आप ज़्यादा दे रहे हैं और आपको कम मिल रहा है। देखिए यह कैसे काम करता है? और फिर, जैसा कि हम इस भाग में आगे पढ़ते हैं, हमें यह भी पता चलता है कि तराजू में हेराफेरी की गई है।

तो, उन्होंने तराजू के साथ कुछ ऐसा किया है जिससे स्थिति और भी बदतर हो गई है, और यह उनके लिए ज़्यादा फायदेमंद है। पता नहीं उन्होंने ऐसा कैसे किया, उन्हें मोड़ दिया या कुछ और, क्योंकि वे तराजू का इस्तेमाल करके चीज़ों को तौल रहे हैं। और क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है? आप किसान बाज़ार से कुछ स्ट्रॉबेरी खरीदते हैं, और ऊपरी परत बहुत अच्छी लगती है, लेकिन जब आप निचली परत देखते हैं, तो वे पूरी तरह सड़ी हुई होती हैं।

बेहतर होगा कि आप इन्हें तुरंत खा लें क्योंकि पाँच मिनट में ये खाने लायक नहीं रहेंगे। तो, यही तो हो रहा है। एफ़ा की टोकरी में भूसा डाला जा रहा है।

तो, आपको उतना अनाज नहीं मिल रहा जितना आपने सोचा था। जिस तरह से वे तौल रहे हैं, उसकी वजह से आपको कम अनाज मिल रहा है, और आपको असली अनाज और भूसा दोनों का मिश्रण मिल रहा है। इसलिए, प्रभु इस व्यवहार से खुश नहीं हैं।

यह अन्याय है। और, जैसा कि आप जानते हैं, हमने कल इस बात पर ज़ोर दिया था कि आपको बाइबल के पाठों को लेकर, यहाँ के संदर्भ को ध्यान में रखे बिना, उन्हें आधुनिक संदर्भ में रखने में सावधानी बरतनी चाहिए। लेकिन मुझे लगता है कि यह बात ईसाई व्यापारियों, किसी भी व्यवसायी पर लागू होती है।

प्रभु देख रहे हैं, और मुझे समझ नहीं आता कि बाज़ार में इस तरह की धोखाधड़ी के बारे में आज उन्हें पहले से ज़्यादा कुछ अलग क्यों लगता होगा। मुझे लगता है कि यह एक सार्वभौमिक बात है। प्रभु को इससे नफ़रत है जब लोग दूसरों को आर्थिक रूप से धोखा देते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि ईसाइयों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके व्यापारिक व्यवहार निष्पक्ष हों और वे लोगों को धोखा न दें। और मैं जानता हूँ कि व्यापारिक जगत में, कुछ लोग कहेंगे, "अच्छा, हर कोई ऐसा करता है।" यह तो बस ऐसे ही चलता है।

हर कोई ऐसा करता है। अगर आपको मुनाफ़ा कमाना है, तो आपको ऐसा करना ही होगा। नहीं, आपको ऐसा नहीं करना है।

तुम्हें पता है, प्रभु पर भरोसा रखो। उसके बताए तरीके से करो। निष्पक्ष रहो।

और हो सकता है कि वह आपको आशीर्वाद देकर आपको आश्चर्यचकित कर दे, क्योंकि आप धारा के विपरीत जा रहे हैं, कोई व्यंग्य नहीं। आप धारा के विपरीत जा रहे हैं, और जब आप उसका आदर करेंगे, तो वह आपका आदर करेगा। एली के घराने को याद करो।

प्रभु कहते हैं, "जो मेरा आदर करेंगे, मैं उनका आदर करूँगा। जो मेरा आदर नहीं करेंगे, मैं उन्हें दण्ड दूँगा।" इसलिए, प्रभु को एक अवसर दीजिए।

ऐसी ही किसी समस्या में फँसे हैं, तो प्रभु के बताए तरीके से ऐसा करने की कोशिश कीजिए। और देखिए। हो सकता है कि वह आपको ऐसे तरीकों से आशीष दे, जिनके बारे में आपने सोचा भी नहीं होगा।

तो, प्रभु इससे प्रसन्न नहीं हैं, और यह वास्तव में इस न्याय-भाषण का आरोप-प्रत्यारोप वाला भाग है। प्रभु ने याकूब के घमण्ड की शपथ स्वयं ली है। मैं उनके किए किसी भी काम को कभी नहीं भूलूँगा।

मैं इसे नहीं भूलूँगा। एनआईवी इसका अनुवाद इस प्रकार करता है, "मैंने याकूब के गौरव की शपथ ली है मानो वह याकूब का गौरव है।" यहाँ एक व्याख्या यह है कि प्रभु स्वयं अपनी शपथ ले रहे हैं, हालाँकि ऐसा कहा नहीं गया है, और फिर वे कहते हैं, "मैं याकूब का गौरव हूँ," और यह व्यंग्यात्मक है।

लोग मुझे अपना परमेश्वर मानकर गर्व करते हैं। जिस तरह से वे मेरे साथ व्यवहार करते हैं, मेरे सिद्धांतों और मेरे नियमों की अवहेलना करते हैं, उससे आपको यह कभी पता नहीं चलेगा। मुझे लगता है कि मुझे वे अनुवाद पसंद हैं जिनमें इसे याकूब के गर्व की शपथ के रूप में लिया गया है, और यह और भी व्यंग्यात्मक है।

याकूब का घमंड सचमुच उनका घमंड है। होशे में इसका इसी तरह वर्णन किया गया है। इसलिए, याद रखिए, आप किसी ऐसी चीज़ की शपथ लेते हैं जो स्थिर और अपरिवर्तनीय है।

और इसलिए, प्रभु यह संकेत दे रहे हैं कि याकूब का अहंकार और घमंड ऐसी चीज़ है जो न्याय के बिना नहीं बदलेगी। और इसलिए, मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि जैसे मैं अपने जीवन या अपनी पवित्रता की शपथ लेता हूँ, वैसे ही उनका घमंड भी मेरे शाश्वत, अपरिवर्तनीय चरित्र की तरह ही अपरिवर्तनीय रहे। तो, यह व्यंग्य से भरपूर है।

मैं उनके अभिमान और अहंकार की कसम खाता हूँ। मैं उनके किए कुछ भी नहीं भूलूँगा। मैं यह नहीं भूलूँगा।

पश्चाताप और क्षमा के अलावा, प्रभु कभी नहीं भूलते। और फिर, हम न्याय की घोषणा की ओर बढ़ते हैं जो बताती है कि देश का क्या होगा। क्या इसके लिए देश काँपेगा नहीं? और उसमें रहने वाले सभी लोग शोक नहीं मनाएँगे।

लोग डरेंगे और काँपेंगे। सारा देश नील नदी की तरह उमड़ेगा। वह मिस्र की नदी की तरह हिलेगा और फिर डूब जाएगा।

वे नील नदी के बारे में जानते थे, और मौसमी बदलावों के बारे में भी। नील नदी का जलस्तर बढ़ता था, फिर गिरता था। यह धीरे-धीरे होता है, लेकिन फिर भी वे इसे धरती के हिलने के रूपक के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

के साथ भी यही करने वाला हूँ। पृथ्वी काँपेगी, और आप इसे ऊपर-नीचे होते देखेंगे।

आप जानते हैं, आपने भूकंप के कुछ दृश्य देखे होंगे, तो यह एक निष्पक्ष यात्रा जैसा है। हाँ, और यही वह यहाँ कहना चाह रहे हैं। और इसलिए, पूरा देश ऐसा ही करने वाला है।

और इसलिए, यह भूकंप का मूल भाव है। हमने प्रभु के दिन और उससे जुड़ी कुछ कल्पनाओं के बारे में बात की, और अक्सर जब प्रभु किसी ईश्वरीय दर्शन में, न्याय करते हुए प्रकट होते हैं, तो पूरी धरती हिल जाती है। वे सभी चीज़ों के रचयिता हैं, और जब वे न्याय करने आते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे धरती ही भयभीत हो जाती है।

यह मानवीकृत है। यह डरता है कि आगे क्या होगा, क्योंकि ज़मीन को भी नुकसान पहुँचेगा। लोगों पर आने वाले न्याय के परिणाम ज़मीन को ही भुगतने होंगे।

और इसलिए, मुझे लगता है कि इसमें कुछ तो शामिल है। यह लगभग ऐसा है जैसे ज़मीन को मानव रूप दिया जा रहा हो। यह बहुत काव्यात्मक है, बहुत रूपकात्मक है।

यह मत कहो कि पैगम्बर ने देश का ऐसा चित्रण करके मूर्खता दिखाई है। नहीं, यह अच्छी कविता है। यह अच्छी रूपकात्मक भाषा है।

उस दिन, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, मैं दोपहर के समय सूर्य को अस्त कर दूँगा और पृथ्वी को दिन के उजाले में अन्धकारमय कर दूँगा। मुझे तो यह ग्रहण जैसा लग रहा है। और उन दिनों ग्रहण होते थे, और हम संस्कृति और यहाँ तक कि बाइबल से भी जानते हैं कि ग्रहण को ईश्वर की ओर से एक बड़ा संकेत माना जाता था, लेकिन कई बार।

बेबीलोन के पतन से पहले एक चंद्रग्रहण हुआ था, और उस समय बेबीलोन का राजा चंद्रदेव का उपासक था, इसलिए चंद्रग्रहण हुआ। इसलिए, ये चीजें उनका ध्यान खींचती थीं। वे इसे देवताओं का हस्तक्षेप मानते थे।

मैं यह नहीं कह रहा कि आज के ग्रहण ईश्वरीय हस्तक्षेप हैं। हो सकता है कि कुछ खास संदर्भों में वे अतीत में हुए हों, और इसलिए ज़ाहिर है कि प्रभु किसी न किसी तरह का ग्रहण लाएंगे, लेकिन भले ही वे सिर्फ़ लाक्षणिक रूप से बात कर रहे हों, यह प्रकाश के अंधकार में बदलने का विचार है। हम पूरी किताब में इसी का इस्तेमाल करते आए हैं।

न्याय का समय आ गया है। मैं तुम्हारे धार्मिक उत्सवों को शोक में बदल दूँगा, और तुम्हारे सब गीतों को विलाप में बदल दूँगा। मैं तुम सब के सिर पर टाट ओढ़ाऊँगा और तुम्हारे सिर मुँड़ा दूँगा।

किसी की मृत्यु पर शोक मनाने के लिए वे अपनी संस्कृति में ऐसा ही करते थे। वे अपने सिर मुँडवाते थे, टाट ओढ़ते थे ताकि सबको यह संकेत मिल सके कि इस समय जीवन असामान्य है। हमें एक क्षति हुई है, और हम उसका शोक मना रहे हैं, और आप इसे प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया में भी देख सकते हैं।

कनानी पौराणिक कथाओं में जब बाल देवता की मृत्यु होती है, तो वह वास्तव में मृत्यु से पराजित होकर पाताल लोक में चला जाता है। उच्च देवता एल नीचे आते हैं, टाट ओढ़ते हैं, और शोक मनाने के लिए अपने शरीर को काटना शुरू कर देते हैं। इसलिए, इस संस्कृति में, आज भी, वे बहुत ही बाह्य अभिव्यक्तिपूर्ण हैं।

अगर आप मध्य पूर्व के टीवी शो देखें, तो वे शोक मनाते समय, गुस्से में होते समय बहुत ही भावुक होते हैं, और यही तो होने वाला है, और फिर उसकी गंभीरता पर ध्यान दें। मैं उस समय को इकलौते बेटे के लिए शोक जैसा बनाऊँगा, और उसके अंत को एक कड़वे दिन जैसा। एक बच्चे को खोना बहुत बुरा होता है, लेकिन आप खासकर उन लोगों के लिए दुखी होते हैं जो अपने इकलौते बच्चे को खो देते हैं, और यही शोक की सीमा है।

जैसे ही उन पर न्याय का समय आएगा, वे अपने आस-पास जो कुछ देखेंगे, उसके लिए विलाप करेंगे, व्यापक मृत्यु और विनाश, ठीक वैसे ही जैसे आप अपने इकलौते बेटे के लिए विलाप करते हैं। विलाप और रोना ज़ोरदार होगा। प्रभु यहोवा की घोषणा है, वे दिन आ रहे हैं जब मैं पूरे देश में अकाल भेजूँगा, और हम पहले ही उस कल्पना का इस्तेमाल वास्तविक अकालों के लिए कर चुके हैं।

प्रभु ने उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए, कम से कम कुछ इलाकों में, पहले ही अकाल भेज दिया है, लेकिन यहाँ वह उस बारे में बात नहीं कर रहे हैं, जब मैं पूरे देश में अकाल भेजूँगा, न कि खाने का या पानी की प्यास का, बल्कि प्रभु के वचनों को सुनने का अकाल। तो एक समय आएगा जब आप प्रभु से संदेश चाहेंगे, लेकिन आपको वह नहीं मिलेगा। शाऊल याद है? शाऊल ने प्रभु की इस हद तक अवज्ञा की कि वह अब प्रभु से संपर्क नहीं कर सकता था।

उसे कोई भविष्यसूचक संदेश नहीं मिल रहा था, शायद शमूएल के न्याय के संदेश के अलावा, और प्रभु अब उससे संवाद नहीं कर रहे थे। और अंततः वह इतना हताश हो गया कि उसने उस जादूगरनी या माध्यम के पास जाकर, जो एंडोर की माध्यम है, शमूएल से, मृतकों से संपर्क करने की कोशिश की। और इसलिए इन लोगों के साथ यही होने वाला है।

याद रखिए, ये वही लोग हैं जिन्होंने भविष्यवक्ताओं से कहा था, "चुप रहो, बात मत करो।" हम बेथेल के पुजारी के साथ ऐसा ही देखते हैं। वह आमोस से कहता है, "चुप रहो, यहाँ से चले जाओ, हमें तुम्हारा भविष्यसूचक संदेश नहीं चाहिए।"

और इसलिए यह एक बहुत ही उचित निर्णय है। हम देख रहे हैं कि परमेश्वर का न्याय बहुत कठोर होने वाला है। अब हम देख रहे हैं कि यह उचित है।

जो लोग परमेश्वर के वचन को बहुत आक्रामक तरीके से अस्वीकार करते हैं, उनके लिए एक दिन ऐसा आ सकता है जब परमेश्वर उनसे संवाद करना बंद कर देगा, और यही होने वाला है। लोग भूमध्य सागर से लेकर मृत सागर तक, समुद्र से समुद्र तक लड़खड़ाते रहेंगे। गलील के लोग, प्रभु के वचन की खोज में समुद्र से समुद्र तक और उत्तर से पूर्व तक भटकते रहेंगे, लेकिन उन्हें वह नहीं मिलेगा।

नबी बोलेंगे नहीं। उस दिन, सुंदर युवतियाँ और बलवान युवक प्यास से बेहोश हो जाएँगे। जो लोग गालियाँ देते हैं, यहाँ भाषा थोड़ी गूढ़ हो जाती है, लेकिन मुझे लगता है कि वे मूर्तियों की बात कर रहे हैं, विभिन्न मूर्तियों की।

जो लोग सामरिया के पाप की कसम खाते हैं। सामरिया का पाप क्या होगा? मुझे लगता है कि पाप का इस्तेमाल मूर्तिपूजा के पर्यायवाची के रूप में किया जा रहा है। जब आप किसी मूर्ति की पूजा करते हैं, तो आप पाप कर रहे होते हैं।

तो यह सामरिया की एक मूर्ति है जो लोगों को उसकी पूजा करने पर पाप करने पर मजबूर कर रही है। और जो लोग सामरिया के पाप की कसम खाते हैं, मैं इसे पापपूर्ण मूर्तिपूजा या सामरिया में रहने वाली पापपूर्ण मूर्ति कहूँगा। शायद बाल, शायद कनानी देवता बाल।

आप जानते हैं, अहाब ने एक कनानी स्त्री, ईजेबेल से विवाह किया था, और वह बाल पूजा लेकर आई। और बाल पूजा के साथ अशेरा की पूजा भी शुरू हुई। अशेरा एक देवी है जिसकी पूजा की जाती है।

तो शायद कुछ ऐसा ही होगा। कौन कहता है, दान, तेरा देवता जीवित है, यह सच है? याद करो, यारोबाम, पहले, ने दान में एक सोने का बछड़ा, एक मूर्ति स्थापित की थी।

ऐसा लगता है कि यह उसी बात की याद दिलाता है जो शुरुआत में इज़राइल के साथ हुई थी। और हालाँकि मुझे लगता है कि उन्होंने इसे यहोवा का एक प्रतीक बनाने का इरादा किया था, यह एक प्रजनन क्षमता का प्रतीक है। यह बिल्कुल कनानी है।

यह समन्वयवादी है। और मुझे लगता है कि शायद यही वह देवता है जिसकी वे पूजा कर रहे हैं। समय के साथ, मुझे यकीन है कि वे बाल पूजा के साथ-साथ उस देवता की भी पूजा करते हैं।

या फिर, ईश्वर की तरह ही, यह सचमुच बेशर्बा का मार्ग है। इसलिए हमें ठीक-ठीक पता नहीं है कि इसका क्या अर्थ है। लेकिन इस समानता को देखते हुए, मुझे लगता है कि इसका मतलब किसी झूठी उपासना पद्धति से है।

हो सकता है कि बेशर्बा में मूर्तिपूजा अभी भी जारी हो। वे कभी गिरकर फिर नहीं उठेंगे। और इसलिए ध्यान दें कि यहूदा, बेशर्बा के दक्षिण में है।

वह यहूदा है। इसलिए वह धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से यहूदा को भी इसमें शामिल कर रहा है क्योंकि न्याय उन पर आने वाला है।

तो यह इस खंड का पहला भाग है। मैं अध्याय 9 की आयत 10 तक सिद्धांत बताने का इंतज़ार करूँगा। हम अध्याय 9 से शुरुआत करेंगे और अगले व्याख्यान में इसे पूरा करेंगे।

तो अब हम अध्याय 9 पर आते हैं, और आमोस को एक और दर्शन देखने को मिलेगा। मैंने प्रभु को देखा। और यहाँ प्रभु, अदोने हैं।

इसमें प्रभु को सर्वोच्च कहा गया है। और इसलिए मैंने सर्वोच्च परमेश्वर को वेदी के पास खड़ा देखा। इसका मतलब है कि वह किसी प्रकार का आराधना केंद्र देख रहे हैं।

उसने अभी कुछ उपासना केंद्रों का जिक्र किया है। दान, बेशर्बा और सामरिया। और मैंने प्रभु को वेदी के पास खड़ा देखा।

आप सोच रहे होंगे, कौन सी वेदी? कोई भी वेदी जहाँ ये लोग उपासना करते हैं। और उसने कहा, "खंभों के शिखरों पर प्रहार करो ताकि चौखटें हिलें।" इस प्रकार यहोवा आज्ञा दे रहा है कि जिस पवित्र स्थान में यह वेदी है, वहाँ गिर जाएगा, ढह जाएगा।

उन्हें सब लोगों के सिर पर गिरा दो। तो एक मंदिर है जिसमें एक वेदी है, और प्रभु आदेश दे रहे हैं कि मंदिर को नष्ट कर दिया जाए। और छत उनके ऊपर गिर जाएगी।

और जो बचे हैं, उनके बारे में तो यही लगता है कि जब वेदी गिरेगी, यानी मंदिर गिरेगा, तो बहुत से लोग मारे जाएँगे। जो बचे हैं, उन्हें मैं तलवार से मार डालूँगा। कोई भी बच नहीं पाएगा।

कोई भी नहीं बचेगा। तो देखिए कि न्याय की अपरिहार्यता के विषय को यहाँ कैसे विकसित किया जा रहा है। मैंने इसे इस खंड के लिए एक तरह से प्रमुख विषय के रूप में इस्तेमाल किया है।

मुझे लगता है कि यह सच है, लेकिन यहाँ इसका विशेष रूप से उल्लेख किया जा रहा है। और यहाँ, याद कीजिए, मेरी रूपरेखा में, मैंने इस भाग को "लुका-छिपी में ईश्वर हमेशा जीतता है" कहा था। मुझे लगता है कि अब आप समझ गए होंगे कि मैं यह शीर्षक क्यों इस्तेमाल कर रहा हूँ।

इसलिए वे न्याय से भागने की कोशिश कर सकते हैं। आप जानते हैं, न्याय आने पर हमेशा भगोड़े, शरणार्थी मौजूद होते हैं। फिर भी, वे खुद को कार्मेल की चोटी पर छिपा लेते हैं।

तो, कार्मेल उच्चतर क्षेत्रों में से एक है। मान लीजिए कि वे ऊपर तक पहुँचने की कोशिश करते हैं, मैं पद्य से आगे निकल गया, इसलिए क्षमा करें। हालाँकि, वे नीचे की गहराई तक खुदाई करते हैं।

हम एक मिनट में यहाँ कार्मेल वापस आएँगे। हालाँकि वे नीचे की गहराई तक खुदाई करते हैं, वहाँ से मेरा हाथ उन्हें ले जाएगा। तो शायद यह विचार हो सकता है कि अगर वे अधोलोक में उतर जाएँ, जहाँ मरे हुए लोग रहते हैं, तो वे ज़मीन में बहुत नीचे तक खुदाई कर सकते हैं, मुझसे दूर भागने की कोशिश कर सकते हैं।

नहीं, कोई फायदा नहीं। भले ही वे ऊपर स्वर्ग तक चढ़ जाएँ, मैं उन्हें वहाँ से नीचे लाऊँगा। तो ज़ाहिर है, वे पाताल लोक में नहीं उतर सकते।

वे स्वर्ग में नहीं चढ़ सकते। लेकिन प्रभु न्यायप्रिय हैं, आप जानते हैं, सैद्धांतिक रूप से कहते हैं, चाहे तुम दुनिया की किसी भी सीमा पर चले जाओ, तुम मुझसे बच नहीं पाओगे। तुम मुझसे परिधि पर छिपने की कोशिश करोगे, मैं तुम्हें ढूँढ़ लूँगा, और मैं तुम पर अपना न्याय करूँगा।

तो ज़रा सोचिए, यहाँ तर्क क्या है। इसे मेरिज़म कहते हैं, जहाँ आप बीच की हर चीज़ के लिए विपरीत अतिशयोक्ति का इस्तेमाल करते हैं। तो अगर वो जगहें सुरक्षित नहीं होंगी, तो उन जगहों का क्या होगा जहाँ मैं पहुँच सकता हूँ? नहीं, ये काम नहीं करेगा।

भले ही वे छिप जाएँ, और वह यहाँ वालों के पास नीचे आ जाए। भले ही वे कार्मेल की ऊँची चोटी पर छिप जाएँ, फिर भी मैं वहाँ उनका पीछा करूँगा और उन्हें पकड़ लूँगा। भले ही वे समुद्र की तलहटी में मेरी नज़रों से छिप जाएँ, पर यह सचमुच संभव नहीं है, लेकिन अगर उन्होंने कोशिश भी की, तो वहाँ मैं साँप को उन्हें डसने का आदेश दूँगा।

तो वे चाहे कहीं भी जाएँ, ऊँचे या नीचे, ईश्वर की दुनिया में कहीं भी, प्रभु उन्हें पकड़ ही लेंगे, और उनके पास एजेंट, ऑपरेटिव भी हैं। उनके पास यह साँप है। तो इसकी कई तरह से व्याख्या की गई है।

बाइबल के काव्यात्मक पाठ में, एक समुद्री जीव, लेविथान, सात सिर वाला प्राणी है, जिसका संबंध... भजन 74 कहता है कि प्रभु ने लेविथान के सिरों को पराजित किया। कनानी सामग्री से हमें पता चलता है कि उसके सात सिर हैं। तो शायद वह अराजकता के राक्षस की बात कर रहा है।

उसका नाम यही है। वह समुद्र में रहता है। तो शायद वह यहाँ का साँप है।

लेविथान को अन्य स्थानों पर सर्प कहा गया है। तो शायद प्रभु कह रहे हैं, अरे, बुरे लोग, बुरी ताकतें भी अंततः मेरी आज्ञा मानती हैं, और मैं उनसे कहूँगा कि वे तुम्हें पकड़ें और तुम्हें डसें और तुम मर जाओ। शायद यही बात ध्यान में है।

हो सकता है वह सिर्फ साँप की बात कर रहा हो। कभी-कभी हिब्रू में, जब कोई शब्द सामान्य होता है, तो उस पर उपपद लगा दिया जाता है। हम भी कभी-कभी ऐसा करते हैं।

हम एक विशिष्ट नीली चिड़िया या एक विशिष्ट कुत्ते के बारे में बात करेंगे, और हम सिर्फ कुत्ता ही कहेंगे, और हम जानते हैं कि यह एक संदर्भ में सामान्य है। लेख का हमेशा यह मतलब नहीं होता कि यह विशिष्ट रूप से एकवचन है। इसलिए आप इसका अनुवाद यूँ कर सकते हैं, एक साँप, एक ज़हरीला साँप, उन्हें काटेगा।

आप जानते हैं, एक प्रकार का समुद्री साँप जो आपको मार सकता है। इसलिए टिप्पणीकारों के बीच इस बात पर थोड़ी बहस चल रही है कि वह कौन सा साँप है। बहरहाल, यह बुरी खबर है।

हालाँकि, तुम इसे पहचानते हो, वह साँप तुम्हारे लिए मौत लेकर आएगा। हालाँकि उन्हें उनके शत्रुओं द्वारा निर्वासित कर दिया जाएगा, फिर भी मैं वहाँ तलवार चलाकर उन्हें मार डालने का आदेश दूँगा। इसलिए तुम भाग नहीं सकते।

तुम मेरे न्याय से बच नहीं सकते। मेरे न्याय में निर्वासन भी शामिल होगा। तुम सोच रहे होगे, अगर हम निर्वासन में चले गए, तो शायद हम इस जगह से दूर हो जाएँगे, और यहीं प्रभु रहते हैं।

वे शायद प्रभु को अपने क्षेत्र का संरक्षक देवता मानते होंगे। नहीं। पुराना नियम इस बात पर ज़ोर देता है कि प्रभु कोई क्षेत्रीय देवता नहीं है जो किसी एक स्थान तक सीमित हो।

वह पूरे संसार का सर्वोच्च रचयिता है, और वह सब कुछ नियंत्रित करता है, और यदि तुम निर्वासन में भी हो, तो भी मैं तलवार से उन्हें मार डालने का आदेश दूँगा। मैं उन पर भलाई के लिए नहीं, बल्कि हानि के लिए नज़र रखूँगा, और यह वह स्थान है जहाँ इब्रानी पाठ में रा'आ शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ कभी-कभी बुराई होता है, लेकिन प्रभु बुराई का समर्थन करने वाला नहीं है। इस इब्रानी शब्द का अनुवाद आपदा, विपत्ति या बुराई के रूप में किया जा सकता है।

यह संदर्भ पर निर्भर करता है, और मुझे लगता है कि एनआईवी ने यहाँ एक समझदारी भरा चुनाव किया है। भलाई के बजाय नुकसान, आशीर्वाद के बजाय विपत्ति, और इसलिए अगर आप निर्वासन में भी जाते हैं, तो आप बच नहीं सकते। मैं आप पर नज़र रखूँगा, और निर्वासन में आपको कष्ट सहने दूँगा।

तो यह एक अपरिहार्य न्याय है, और मुझे लगता है कि हम पाँचवें और छठे पद को पढ़ेंगे, और फिर अगले व्याख्यान की ओर बढ़ेंगे, लेकिन पाँचवें और छठे में, हमारे पास आमोस में अब तक देखे गए उन खंडों में से एक और है, एक अध्याय चार में और एक अध्याय पाँच में। इन न्याय की घोषणाओं के बीच, प्रभु रुकते हैं, और वे केवल अपना वर्णन करते हैं, ठीक उसी तरह जैसे आप

भजन संहिता के किसी भजन में देखने की अपेक्षा करेंगे, जहाँ भजनकार केवल यह वर्णन कर रहा है कि परमेश्वर कितना महान और शक्तिशाली है, और कुछ विद्वानों का कहना है कि यह वास्तव में एक भविष्यसूचक न्याय भाषण के अनुकूल नहीं है। मुझे लगता है कि यह उपयुक्त है, क्योंकि वे शायद परमेश्वर के बारे में कमतर अर्थ में सोच रहे होंगे, और इसलिए वह सभी को याद दिलाते हैं कि वह कौन हैं।

तो ये रहा वो कौन है। प्रभु, सर्वशक्तिमान प्रभु, वही परमेश्वर है। प्रभु, सर्वशक्तिमान, यहोवा, जो सेनाओं का नेतृत्व करता है, वही वास्तव में कहा गया है।

वह धरती को छूता है, और वह पिघल जाती है। मुझे तो यह न्याय जैसा लगता है। वह धरती को छूता है, और वह पिघल जाती है, और उसमें रहने वाले सभी लोग विलाप करते हैं।

तो यही न्याय है। सारा देश नील नदी की तरह ऊपर उठता है, फिर मिस्र की नदी की तरह डूब जाता है। वह पहले ही इस बारे में बात कर चुका है।

यही भूकंप है, जब प्रभु न्याय करने आते हैं तो धरती और लोगों का हिलना। वह स्वर्ग में अपना ऊँचा महल बनाते हैं। इसलिए अगर वह स्वर्ग में एक ऊँचा महल बना रहे हैं, तो मुझे लगता है कि यह उन्हें स्वर्ग का राजा बनाता है, और इस तरह उन्हें दुनिया का राजा बनाता है।

इसलिए उसे वह करने का अधिकार है जो उसने कहा है कि वह करने जा रहा है। वह समुद्र का पानी बुलाता है और उसे धरती पर उंडेल देता है। उसका नाम यहोवा है।

तो वह जल चक्र और उस सब पर नियंत्रण रखता है। यह ज़रूरी नहीं कि न्याय के दायरे में आए, लेकिन फिर भी, यह उसे प्रकृति पर पूर्ण नियंत्रण रखने वाला दिखाता है क्योंकि उसने यह सब रचा है। और इसलिए यही वह व्यक्ति है जो कह रहा है कि राष्ट्र पर न्याय आने वाला है।

प्रभु उसका नाम है, और इसलिए मुझे लगता है कि परमेश्वर की संप्रभुता का यह चित्रण उसके न्याय की घोषणा को और पुख्ता करता है। अगर तुम्हें मेरी उस क्षमता पर कोई शक है जिसकी मैं तुम्हें धमकी दे रहा हूँ, तो बेहतर होगा कि तुम दो बार सोचो। याद रखो कि मैं कौन हूँ।

तो अब हम यहीं विराम लेंगे, और अध्याय 9, श्लोक 7 में अपना अगला व्याख्यान शुरू करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म का आमोस की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। आमोस, सिंह दहाड़ चुका है, कौन नहीं डरेगा? यह सत्र 7 (B), आमोस 8:4-9:10 है। न्याय अपरिहार्य है।